International Journal of Contemporary Research In Multidisciplinary

Review Paper

फुटबॉल के खेल का इतिहास

डॉ. भूपाल सिंह राठौड़
शारीरिक शिक्षक (PTI), राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, कानपुरा, जिला- सलुम्बर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author: * डॉ. भूपाल सिंह राठौड़

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.13749417

सारांश

फुटबॉल के खेल का इतिहास प्राचीन सभ्यताओं तक फैला हुआ है जिसमें मनुष्य ने खेल और मनोरंजन के साधन के रूप में गेंद के साथ खेल खेलना शुरू किया। हालांकि आधुनिक फुटबॉल की उत्पत्ति 19वीं शताब्दी के इंग्लैंड में हुई थी। इसे पहले "एसोसिएशन फुटबॉल" कहा जाता था और इसे अन्य प्रकार के फुटबॉल खेलों से अलग करने के लिए नियमों की एक संहिता को बनाया गया जिसे "कैम्ब्रिज नियम" के नाम से जाना जाता है। 1863 में इंग्लैंड में फुटबॉल एसोसिएशन की स्थापना हुई, जो दुनिया का पहला फुटबॉल संघ था और इसे फुटबॉल के औपचारिक नियमों के तहत संगठित किया गया। समय के साथ यह खेल पूरी दुनिया में फैल गया और अलग-अलग देशों ने अपनी-अपनी लीग और फुटबॉल संघ बनाए। 20वीं शताब्दी तक, फुटबॉल दुनिया का सबसे लोकप्रिय खेल बन चुका था और इसे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर फ़ीफा द्वारा नियंत्रित किया जाने लगा। फुटबॉल का सबसे प्रतिष्ठित टूर्नामेंट, फीफा विश्व कप, पहली बार 1930 में आयोजित किया गया और आज यह विश्व के सबसे बड़े और सबसे महत्वपूर्ण खेल आयोजनों में से एक है।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 05-06-2024
- **Accepted:** 04-07-2024
- **Published:** 11-09-2024
- **IJCRM:**3(5); 2024: 79-81
- **©2024, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Manuscript

भूपाल सिंह राठौड़. फुटबॉल के खेल का इतिहास. International Journal of Contemporary Research in Multidisciplinary.2024; 3(5): 79-81.

कुंजी शब्द: फुटबॉल इंग्लैंड फीफा खेल।

ऐतिहासिक अनुसंधान के अनुसार 500 बी. सी. के लगभग स्पार्टा द्वीप में फुटबॉल से मिलता जुलता खेल खेलते थे जिसे वे 'हरपास्टन' कहते थे। उस समय के खेल की शुरुआत एक प्रकार के टॉस से होती थी। टॉस में गेंद को मध्य क्षेत्र से विपक्षी क्षेत्र में फेंका जाता था। इस प्राचीन फुटबॉल का खेल क्षेत्र आज की तुलना में अत्यंत विस्तृत होता था। इसके आकार को विरोधी संघ के कप्तानों या नेताओं की आपसी सहमति से निर्धारित किया जाता था। विरोधी दलों की संख्या भी निश्चित नहीं थी परंतु यह शर्त अवश्य थी कि दलों का आकार लगभग समान हो उस खेल में गोल पोस्ट खड़े करने का प्रचलन नहीं था। गेंद की प्रहार से विपक्ष की गोल रेखा के पार जाए तो गोल माना जाता था। हाथ से गेंद फेंकना या उठाकर भागना भी वर्जित था हाथों से गेंद का प्रक्षेपण खेल के प्रारंभ में या एक गोल के पश्चात नई शुरुआत के समय ही किया जाता था। यह पूर्णरूपेण किक खेल था। ऐतिहासिक प्रमाणों में गेंद के आकार प्रकार की कोई चर्चा नहीं की गई है। किंतु ऐसा विश्वास किया जाता है कि गेंद एक जानवर के ब्लाडर को फुलाकर बनती थी और संभव है कि इस ब्लाडर पर किसी पशु के चर्म चरण का खोल चढ़ाया जाता हो।

स्पार्टावासियों द्वारा फुटबॉल परंपरा को चलाया और उसे फाउल्स (फोलियों) नाम दिए जाने के शताब्दियों बाद रोमनवासियों ने इसे फुटबॉल के रूप में अपनाया। उन्होंने इस खेल के तौर तरीके में थोड़ा परिवर्तन किया किंतु यह परिवर्तन आमूल परिवर्तन नहीं था। इस बात का उल्लेख भी मिलता है कि स्पार्टा और रोम के लोगों के बीच अक्सर फुटबॉल प्रतियोगिताएं होती थी और इसमें निर्धारित नियमों का पालन किया जाता था। रोम विजेता होने के कारण यह खेल ब्रिटेन पहुंचा।

© 2024 डॉ. भूपाल सिंह राठौड़. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

कालांतर में विजेता रोम तो वापस लौट गए किंतु फुटबॉल के खेल को अपनी धरोहर के रूप में ब्रिटेन में ही छोड़ गए।

डरनी नगरी के इतिहास में तो 217 ई. से फुटबॉल का उल्लेख मिलता है। 10वीं या 11वीं शताब्दी में इस खेल में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। इस समय गोल पोस्ट लगाने की परंपरा शुरू हुई तथा टीमों की सदस्य संख्या सीमित कर दी गई। सम्राट हेनरी द्वितीय के शासनकाल में यह खेल काफी लोकप्रिय हो गया। सम्राट हेनरी ने महसूस किया कि फुटबॉल का खेल तीरंदाजी के अनिवार्य और राष्ट्रीय खेल की लोकप्रियता को धक्का पहुंचा रहा है अतः उसने इसके दमन के लिए सख्त आदेश जारी किए। सन 1889 ईस्वी में जब सम्राट की मृत्यु हुई तब तक फुटबॉल के खेल का नामोनिशान ब्रिटेन में मिट चुका था। सम्राट हेनरी का फुटबॉल पर लगा प्रतिबंध लगभग 400 वर्षों तक रहा। सन 1603 में स्टुअर्ट वंशज राजा जेम्स प्रथम इंग्लैंड के राज सिंहासन पर बैठे। इस समय तक इंग्लैंड की फौज युद्ध में बारूद का व्यापक प्रयोग करने लगी थी। अतः तीरंदाजी जैसी प्राचीन अस्त्र विद्या का सामरिक महत्व लगभग समाप्त हो गया था। फुटबॉल प्रेमियों की अपील पर उसने फुटबॉल पर प्रतिबंध को समाप्त कर इसे एक स्वस्थ और पौरुषपूर्ण खेल घोषित किया। इस शाही आशीर्वाद के फलस्वरुप फुटबॉल शीघ्र ही इंग्लैंड का सर्वाधिक लोकप्रिय खेल बन गया।

आजकल सोकर शब्द का प्रयोग फुटबॉल को रग्बी पद्धति के खेल (जिसमें हाथ पैर दोनों का प्रयोग किया जाता था) से होता है। सन 1848 में इंग्लैंड के प्रसिद्ध फुटबॉलर क्लबों ने अनुभव किया कि इस खेल को भी नियमबद्ध किया जाए। कैंब्रिज नगर में उनकी बैठक हुई जिसमें 'कैंब्रिज रूल' के नाम से एक खेल संहिता अपनाई गई। इसमें एक नियम स्पष्ट था कि गेंद केवल पद-प्रहार से ही बढ़ाई जाए। सन 1862 में इसमें और भी अनेक सुधार किए गए। सन 1863 में अविस्मरणीय खेल पद्धति सोकर अर्थात पूर्णतः किक प्रकार पर आधारित खेल पद्धति को अपनाने वाली टीमों ने रग्बी पद्धति के विरोध में 26 अक्टूबर को ग्रेट क्वीन स्ट्रीट में फ्रीमेंशंस ट्रैवन के मुकाम पर सभा आयोजित की। केवल शफिल्ड क्लब को छोड़कर सभी प्रसिद्ध क्लबों क्रुसेडर्स, बारनेस और वॉर ऑफिस आदि ने इसमें भाग लिया। शेफील्ड क्लब अपने आंतरिक झगड़ों के कारण सभा में अपने प्रतिनिधियों को नहीं भेज सकी। कुछ बैठकों के बाद सभा ने फुटबॉल खेल की एक नियम संहिता स्वीकृत की और यही लंदन फुटबॉल संघ का गठन हुआ।

सन 1867 में ऑफ साईड का पुराना नियम बदल दिया गया। इसी समय इंग्लैंड के सभी फुटबॉल क्लबों का संघ बनाया गया और फुटबॉल संघ के सचिव श्री सी. डब्ल्यू. अल्कोक के प्रयत्नों से संघ में फुटबॉल सदस्यों की संख्या बढ़ने लगी। सन 1870 तक इंग्लैंड के सभी प्रसिद्ध फुटबॉल क्लब इस संघ की सदस्यता सूची में आ गए।

फुटबॉल संघ के संगठन से इस खेल को अत्यधिक प्रोत्साहन मिला और कई प्रतियोगिताओ की गंगा बहने लगी। सन 1873 में संघ चैलेंज कप प्रतियोगिता आरंभ करने का निर्णय लिया। संघ की सदस्यता शुल्क बढ़ाकर प्राप्त अतिरिक्त राशि से 25 पाउंड कीमत का कप खरीदा गया। प्रथम प्रतियोगिता में 15 टीमें स्पर्धा में सहभागी हुई तथा फाइनल में वार्ड्रर्स ने रॉयल इंजीनियर की टीम को 1-0 से हराकर जीत हासिल की थी।

इंग्लैंड की अपेक्षा स्कॉटलैंड ने इस खेल में निश्चय ही तेजी से विकास किया और इन दिनों इंग्लिश टीमों की सहायता के लिए कई स्कॉटिश खिलाड़ी भी आ जाते थे अतः शीघ्र ही फुटबॉल में प्रोफेशनलिज्म ने प्रवेश किया। सन 1882 में इसमें खुली व्यवसायिकता को मंजूरी देने का प्रस्ताव रखा गया। 20 जून 1885 को यह प्रस्ताव स्वीकृत हो गया। सन 1887 को फुटबॉल संघ की नियम संहिता में व्यापक बदलाव किए गए। पेनल्टी किक के नियम सन 1890 में लागू हुए। सन 1907 में शौकिया खिलाड़ियों की टीमों ने संघ से नाता तोड़ लिया। फुटबॉल संघ ने इन्हीं दिनों एक प्रस्ताव पारित किया कि शौकिया या व्यावसायिक क्लबों को मान्यता देनी पड़ेगी। इस आधार पर शौकिया फुटबॉल संघ नामक एक नई संस्था बनी। यह अलगाव की स्थिति 7 वर्षों तक बनी रही। सन 1913-14 में इसलिगटन कॉरिथियंस क्लब और विश्वविद्यालय टीम का हस्तक्षेप समाप्त हो गया।

कुछ समय उपरांत यह खेल यूरोप की धरती पर आया आरंभ में यह खेल मंद गति से पनपने लगा। वाटरलू की लड़ाई के बाद फुटबॉल फ्रांस और जर्मनी में पहुंचा। उस समय यूरोप में फुटबॉल बड़े अव्यवस्थित ढंग से खेला जाता था। पिछली शताब्दी के आठवें दशक में बेल्जियम, डेनमार्क, फ्रांस, जर्मनी, इटली, ऑस्ट्रेलिया, हंगरी और पोलैंड में राष्ट्रीय स्तर पर फुटबॉल संघ स्थापित किए गए। स्पेन और हॉलैंड ने इस खेल को बाद में अपनाया।

अंग्रेजी साम्राज्य का प्रसार जब पूर्वी देशों की ओर हुआ तो उसके साथ फुटबॉल भी पूर्वी देशों में गया। पिछली शताब्दी के पांचवें दशक में फुटबॉल भारत, बर्मा और अन्य उपनिवेशी देशों में प्रचलित हुआ। यद्यपि फुटबॉल भारतीय धरती पर सबसे पहले 1840 में खेला गया परंतु इसे भारतीय लोगों ने गंभीरता से सन 1878 में ही अपनाया। पूर्वी जमीन में भारतीय फुटबॉल सबसे पुराना फुटबॉल संघ माना जाता है। जापान और चीन में फुटबॉल इस शताब्दी के प्रारंभ से ही खेला जाता रहा है। यूरोपीय देशों में फुटबॉल को अपनाने वालों में रूस सबसे अंतिम देश था। किंतु सोवियत देश में फुटबॉल को सबसे लोकप्रिय खेल और महत्वपूर्ण मनोविनोद का साधन माना जाता है। प्राचीन देशों में अफगानिस्तान, ईरान, अरब राष्ट्र, मिश्र और निवोदित देशों में ब्राज़ील, पेरू, उरुग्वे, इक्वेडोर आदि देशों ने इस शताब्दी के आरम्भ में इस खेल को अपनाया और इन देशों में यह खेल बड़ी गंभीरता से खेला जाने लगा। अंतरराष्ट्रीय फुटबॉल की संभावनाए सन 1872 में प्रकट हुई, जब दो स्वतंत्र राष्ट्रों के बीच प्रथम मैच खेला गया। यह मैच इंग्लैंड और स्कॉटलैंड के मध्य ग्लास्गो शहर में खेला गया था। इसके 25 वर्ष बाद सन 1906 में फुटबॉल को पहली बार एथेंस में आयोजित चौथे ओलंपिक खेलों में शामिल किया गया। इसमें डेनमार्क ने पहला विजयी खिताब जीता था। इसके लगभग 25 वर्ष बाद 1930 में उरुग्वे में प्रथम विश्व कप प्रतियोगिता का आयोजन हुआ जिसमें 17 देशों ने भाग लिया जिसमें केवल तीन यूरोपीय देश शामिल थे। विश्व कप प्रतियोगिता के विजेता को ज्यूल्स रिमेट ट्रॉफी प्रदान की जाती थी। इस ट्रॉफी को जो कि एक स्वर्ण देवदूत की मूर्ति के रूप में होकर फीफा के प्रथम अध्यक्ष द्वारा प्रदान की गई थी। इस प्रतियोगिता को इसलिए प्रारंभ किया गया कि खेलों के माध्यम से विश्व में मैत्री, सद्भावना और सहयोग की भावना का प्रसार किया जा सके।

निष्कर्ष

फुटबॉल का इतिहास हजारों वर्षों की यात्रा का परिणाम है, जो विभिन्न सभ्यताओं और संस्कृतियों के विकास से विकसित हुआ है। ***19***वीं शताब्दी में इंग्लैंड में इसके आधुनिक रूप का गठन हुआ, जिससे यह एक संगठित और नियमबद्ध खेल के रूप में सामने आया। धीरे-धीरे

© 2024 डॉ. भूपाल सिंह राठौड़. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

फुटबॉल ने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपार लोकप्रियता हासिल की और आज यह दुनिया के सबसे लोकप्रिय खेलों में से एक है। फ़ीफा जैसे संगठनों के नेतृत्व में फुटबॉल ने न केवल खेल का मानकीकरण किया, बल्कि इसे वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी और मनोरंजक खेल के रूप में स्थापित किया। विश्व कप, चैंपियंस लीग, और अन्य प्रमुख टूर्नामेंटों ने इसे एक अंतर्राष्ट्रीय भाषा बना दिया है जो सांस्कृतिक और सामाजिक बाधाओं को पार करती है। फुटबॉल न केवल एक खेल है, बल्कि यह विभिन्न समाजों और देशों को जोड़ने वाला एक माध्यम भी है और आने वाले समय में भी यह खेल विश्व भर में खेल प्रेमियों को प्रेरित करता रहेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. विजय लोकापल्ली, आनन्द शर्मा. फुटबॉल का इतिहास. दिल्ली: मनोहर बुक्स; 2010.
2. सागर हाजरा. गोल: द हिस्ट्री ऑफ फुटबॉल. दिल्ली: इग्लू प्रकाशन; 2019.
3. सुरेन्द्र श्रीवास्तव. फुटबॉल: खेल और नियम. दिल्ली: प्रभात प्रकाशन; 2020.
4. संतोष नारायण नौटियाल. फुटबॉल मैच. दिल्ली: पेंगुइन इंडिया; 2012.
5. सोनू कुमार. फुटबॉल: नियम एवं जानकारी. दिल्ली: आर्यन प्रकाशन; 2014.
6. स्पोर्ट्स स्टार, आउटलुक पत्रिका.
7. ऑल इंडिया फुटबॉल फेडरेशन. उपलब्ध: www.the-aiff.com
8. फेडरेशन इंटरनेशनेल डी फुटबॉल एसोसिएशन (फीफा). उपलब्ध: www.fifa.com

Creative Commons (CC) License
This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.

© 2024 डॉ. भूपाल सिंह राठौड़. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/